International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157
Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 3; Issue 2; March 2018; Page No. 382-383

माध्यमिक विद्यालयों के कार्यरत शिक्षकों में समायोजन का अध्ययन।

Niraj Kumar Singh
Research Scholar, Department of Education, Shri Venkateshwara University, Uttar Pradesh, India

प्रस्तावना

शिक्षक उन्नतिशील राष्ट्र की नींव है। शिक्षा से मानव की प्रवृत्ति निर्मित होती है। शिक्षक, शिक्षा व्यवसाय में धुरी सदृश है। राष्ट्र की उन्नति शिक्षकों की गुणवत्ता पर निर्भर है। मानव– इतिहास की श्रेष्ठतम विभूतियों ने इस व्यवसाय को अपनाया है। अध्यापक उस माली के समान है जो विद्यार्थी रूपी पौधों को सींचता है। कोठारी कमीशन[1] (1964) ने कहा था कि –'' भारत के भाग्य का निर्माण इस समय उसकी कक्षाओं में हो रहा है।'' ऐसी स्थिति में भाग्य निर्माता ही यदि संतुष्ट न हो तो सुदृढ़ राष्ट्र की कल्पना साकार नहीं हो सकती।

अनुदानित तथा गैर अनुदानित माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के चयन माप दण्ड एक समान होते हुए भी दोनों के सेवा शर्तो, सुविधाओं, वेतन आदि में अनेक विषमताएँ है। अनुदानित माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों को उनकी कार्य सुरक्षा अर्थात उनकी नियुक्ति स्थायी प्रकृति की होने के कारण उसके प्रति सुरक्षा की भावना अधिक होती है। अतः इन सभी तथ्यों का उनकी समायोजन क्षमता पर सकारात्मक प्रभाव हो सकता है। इसके विपरीत गैर अनुदानित माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों को वेतन कम मिलता है। उनके ऊपर अत्यधिक कार्य का बोझ रहता है। उनकी नियुक्ति की प्रकृति अस्थायी होती है, उनको सुविधाएँ पूरी तरह से नहीं मिलती है जिससे उनकी समायोजन क्षमता पर विपरीत प्रभाव हो सकता है। अतः अनुदानित तथा गैर अनुदानित माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों में समायोजन का अध्ययन करना शिक्षा के क्षेत्र में अनिवार्य हो जाता है।

बिने[2] (1964) ने अपने अध्ययन के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला कि बुद्धि सामाजिक एवं संवेगात्मक समायोजन तथा सामाजिक, आर्थिक कारकों एवं छात्राध्यापिकाओं के संदर्भ में धनात्मक संबंध है। बलूम तथा अन्य[3] (1968) के निग्रोज अध्ययन के अनुसार समायोजन में सामाजिक अलगाव सम्पूर्ण व्यक्तित्व इत्यादि का प्रभाव उनके विभिन्न रूपों पर पड़ता है। बी0 पी0 सिंह[4] (1987) ने माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों में समायोजन का निष्कर्ष निकाला कि असामान्य समूह असमायोजित रहा है। निर्मला तिवारी[5] (1988) ने मेरठ के अध्यापकों पर किये अध्ययन में पाया कि शिक्षण अभिक्षमता समायोजन में बहुत उच्च धनात्मक सहसंबंध है। डुचेव, जेड0[6] (2005) ने अपने अध्ययन में पाया कि गतिशील आधुनिक परिवेश शिक्षकों को विविध अवसर प्रस्तावित करता है। कार्यस्थल, कार्य कलाप और व्यावसायिक स्थिति के परिवर्तन की सम्भावना व्यावसायिक समायोजन के मुद्दों का महत्व बढ़ाने के लिए पूर्वापेक्षित है।

अध्ययनों में पाया गया है कि समायोजन शिक्षक के जीवन का एक महत्वपूर्ण पक्ष है तथा यह व्यक्ति के अनेक मनों एवं सामाजिक दुश्चिंता, व्यक्तित्व, संवेग, समाजिक, आर्थिक इत्यादि स्थितियों से घनिष्ठ रूप से संबंधित होता है।

उपरोक्त इन सभी बिन्दुओं को ध्यानगत करते हुए शोधार्थी को जिज्ञासा हुयी कि अनुदानित तथा गैर अनुदानित माध्यमिक विद्यालयों के कार्यरत शिक्षकों में समायोजन का अध्ययन किया जाय। प्रस्तुत शोध इसी पर आधारित है।

शोध उद्देश्य

अनुदानित तथा गैर अनुदानित माध्यमिक विद्यालयों के कार्यरत शिक्षकों में समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ

Ho_1: अनुदानित तथा गैर अनुदानित माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अध्ययन विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन जनसंख्या

इस शोध हेतु उत्तर प्रदेश के गाजियाबाद जनपद में संचालित अनुदानित तथा गैर अनुदानित माध्यमिक विद्यालयों में वर्ष 2014–15 में कार्यरत शिक्षकों को जीवसंख्या के रूप में सम्मिलित किया गया था।

न्यायदर्श चयन

इस अध्ययन के न्यादर्श चयन हेतु यादृच्छिक विधि का प्रयोग किया गया। गाजियाबाद जनपद के अनुदानित तथा गैर अनुदानित माध्यमिक विद्यालयों के क्रमशः 300–300, कुल 600 शिक्षकों को न्यादर्श के रूप में चुना गया था। इस अध्ययन में पुरूष तथा महिला शिक्षक तथा शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के माध्यमिक विद्यालय को सम्मिलित किया गया।

अध्ययन की परिसीमाएँ

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन में जनसंख्या के रूप में गाजियाबाद जनपद में स्थित अनुदानित तथा गैर अनुदानित माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों को ही लिया गया है।
2. प्रस्तुत शोध अध्ययन में केवल उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त अनुदानित तथा गैर अनुदानित माध्यमिक विद्यालयों को ही सम्मिलित किया गया है।

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण : डा0 एस0 के0 मंगल[7] द्वारा निर्मित ''मंगल शिक्षक समायोजन परिसूची'' का प्रयोग किया गया है।

परिणाम : इस अध्ययन के उद्देश्य के पूर्ति हेतु शून्य परिकल्पना का निर्माण किया गया था।

शोध संबंधी समकों का विश्लेषण

अनुदानित तथा गैर अनुदानित माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों में जीवन संतुष्टि के प्राप्तांकों के मान की सारणी –

तालिका 1

स्मूह	संख्या N	मध्यमान M	मानक विचलन S.D.	C.R. मान	सार्थकता 0.05	सार्थकता 0.01
अनुदानित माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक	300	56.88	9.83	8.54	+	+
गैर अनुदानित माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक	300	49.84	10.36			

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि अनुदानित तथा गैर अनुदानित माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के समायोजन प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 56. 88, एवं 49.84 तथा मानक विचलन क्रमशः 9.83 एवं 10.36 है। इन दोनों समूहों के क्रांतिक अनुपात का मान 8.54 है। जो 0.05 एवं 0.01 सार्थकता स्तरों पर आवश्यक मानों से अधिक है। अतः स्पष्ट है कि अनुदानित तथा गैर अनुदानित माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के समायोजन में सार्थक अंतर है। इसका कारण आज के परिवेश एवं समाज में अनुदानित माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की अपेक्षा गैर अनुदानित माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों को कम महत्व मिलना, तथा दोनो के सेवा शर्तो, वेतन, सुविधाओं आदि में अंतर का होना हो सकता है।

अतः परिकल्पना–''अनुदानित तथा गैर अनुदानित माध्यमिक विद्यालयों के कार्यरत शिक्षकों के समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं है।'' अस्वीकृत की जाती है।

अध्ययन की सार्थकता

प्रस्तुत शोध अध्ययन कई दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है। वर्तमान समय में पूरे देश में अनुदानित तथा गैर अनुदानित माध्यमिक विद्यालयों का संचालन किया जा रहा है। अनुदानित माध्यमिक विद्यालयों के आरक्षित वर्ग, अनारक्षित वर्ग, ग्रामीण, शहरी, पुरूष एवं महिला प्रत्येक वर्ग के शिक्षक उसी वर्ग के गैर अनुदानित माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की अपेक्षा अधिक समायोजन वाले है। दूसरे शब्दों में गैर अनुदानित माध्यमिक विद्यालयों के प्रत्येक वर्ग के शिक्षक अपने वर्ग के अनुदानित माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की अपेक्षा कम समायोजन वाले दृष्टिगत हुए।

संदर्भ

1. दि रिपोर्ट ऑफ दि नेशनल कमीशन (1966) गवर्नमेण्ट ऑफ इण्डिया, मिनिस्ट्री ऑफ एजूकेशन एण्ड नेशनल डेवलपमेन्ट, मैनेजमेन्ट ऑफ पब्लिकेशन, डेलही।
2. बिने (1964) पर्सनालटी एण्ड इन्टेलीजेन्सी ऑफ स्टूडेन्ट टीचर्स, मास्टर थिसिस इन एजूकेशन।
3. ब्लूम एवं अन्य (1968) डाइमेन्सन ऑफ एडजेस्टमेण्ट इन एडलोसेन्ट ब्यायजः निग्रो व्हाइल कम्प्रिजन।
4. बी0पी0सिंह (1987) ए0 स्टडी ऑफ दि एक्सटेन्ट एण्ड पैटर्नस ऑफ रिएक्सन ऑफ फ्रस्ट्रेशन एण्ड प्रोफेशनल एडजेस्टमेण्ट ऑफ सेकेण्डरी स्कूल टीचर्स. पी0एच0डी0 एजूकेषन, एम0एस0यूनि0, एम0बी0 बुच फोर्थ सर्वे ऑफ रिसर्च एजूकेशन, वाल्यूम II, पी0पी0 1330–1331.
5. तिवारी, निर्मला (1998) ए स्टडी ऑफ टीचिंग एप्टीट्यूड, जॉब सैटिशफेक्शन एण्ड एडजेस्टमेण्ट ऑफ टीचर्स, पी0एच0डी0 थीसिस, बी0आर0 अम्बेडकर युनि0 आगरा।
6. डुचेव, जेड0 (2005) प्रोफेशनल एडजस्टमेण्ट इन कैरियर डेवलपमेन्ट ऑफ द टीचर, ट्राकिया जरनल ऑफ साइन्स, वाल्यूम III, नं0–8, पी0पी0 21–23.
7. मंगल, एस0के0 (1987) मैनुअल फार टीचर एडजस्टमेण्ट इनवेन्टरी, नेशनल सायकोलाजी कार्पोरेशन आगरा।
8. बुच, एम0बी0 (2005)ए सर्वे ऑफ एजुकेशनल रिर्सच इट्स सर्वे. एन0सी0ई0आर0टी0।
9. सिंह, अरूण कुमार (2006) मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षामें शोध विधियॉ, मोतीलाल बनारसीदास पब्लिकेशन वाराणसी।
10. गुप्ता, एस0पी0 एवं गुप्ता अल्का (2008) उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, शारदा पुस्तक भवन, यूनिवर्सिटी रोड, इलाहाबाद।
11. मंगल, एस0के0 (2010) एडवांस एजूकेशनल साइकोलाजी, नई दिल्ली, पी0एच0आई0
12. कौल, लोकेश (2009) मेथडालाजी ऑफ एजूकेशनल रिर्सच, नई दिल्ली, विकास पब्लिशिंग हाउस।